६०: मुख्य परिवार राज्य सभा

दिनांक -२१-०२-२०१२

परिवार स्वराज्य सभा क्रम में यह महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में मुख्य परिवार राज्य सभा का गठन होना अखण्ड समाज के अर्थ में अवश्यम्भावी है | इसी क्रम में प्रधान राज्य सभा,और विश्व परिवार सभा का गठन होना पाया जाता है | सम्पूर्ण मानव अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का ज्ञान विकसित चेतना विधि से समझ में आता है | प्रमाणित होने के लिये दसों प्रकार से परिवार, स्वराज्य सभा को पहचानना आवश्यक है | इसी क्रम में मुख्य परिवार राज्य सभा के गठन के मूल में १०-१० मंडल समूह परिवार सभाओं में से १-१ व्यक्ति का निर्वाचन होना बिना किसी प्रचार और बिना किसी खर्च के सम्पन्न होता है | फलस्वरूप कितने भी प्रकार से किये जाने वाले भ्रष्टाचार का निरोध होना पाया जाता है | निर्वाचन कार्य में नियोजित होने वाली वस्तु अथवा धन के आधार पर ही भ्रष्टाचार का उदय होता है | इसका सहयोगी के रूप में सुविधा,संग्रह का अति वांछा अथवा अत्याशा के अर्थ में भी पहचाना जाता है | अस्तु भ्रष्टाचार दो मुद्दों पर निर्भर रहा- अत्याशा और अपव्यय | अपव्यय के अलावा मानव भ्रष्टाचार कर ही नहीं सकता | भ्रष्टाचार के साथ अपव्यय तथा अपव्यय के साथ भ्रष्टाचार जुड़ा ही रहता है | इन तथ्यों के आधार पर शोध करने पर यह पता चलता है कि मानव ही अपने अपेक्षा से भ्रष्टाचार में फंसता है, फिर उठ नहीं पाता | फंसने के समय अच्छा लगता है, छूटने के समय कष्ट लगता है |

इसका परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण हर व्यक्ति कर सकता है | इसी कारणवश विकसित चेतना का प्रस्ताव रखा है | फंसने वाला चेतना जीव चेतना ही है | जीव चेतना समय में चैतन्य होना देखा गया है | चैतन्य होने के क्रम में जीव चेतना ही सर्व प्रथम जीने की आशा के रूप में प्रकट होता है | चेतना विकास क्रम में अथवा जागृति क्रम में यह पता चलता है कि जीव चेतना में जीना पर्याप्त नहीं है | मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में जीना आवश्यक है क्योंकि मानव सुखपूर्वक जीने की आशा से जीना चाहता है | इसलिए न्यायपूर्वक जीना चाहता है | न्यायपूर्वक जीने में जीव चेतना का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है | जीव चेतना में सभी गलती, अपराधों को सही मान कर आचरण करना होता है | यही प्रिय हित लाभ प्रवृत्तियां का फलन है | इसी से आवेश दृष्टव्य है जो लोभ, मोह, काम, मद मात्सर्य क्रोध के रूप में है | यह दुःख एवं पीड़ा का कारण बनता है | परिणामतः इससे छूटने के लिये जब प्रयत्न होता है तो तकलीफ होता है | इसे हर मानव में आंकलित किया जा सकता है | मानव ही आंकलित करेगा | इस क्रम में मानव का सच्चाई में पहुंचने का रास्ता बना है | फलस्वरूप न्याय धर्म सत्य का अध्ययन करेगा | यह सदशास्त्रों के अभ्यास से आरम्भ होता है |

हर मानव में शुभ का चाहना बना ही है | शुभ के लिये क्या कार्य व्यवहार होना चाहिए यह जीव चेतना से सम्भव नहीं है | यह विकसित चेतना विधि से ही सर्व सुलभ होना देखा गया है | विकसित चेतना के लिए विधिवत अध्ययन आवश्यक है | अध्ययन का प्रथम चरण शास्त्राभ्यास में तर्क के संतुष्टि के पश्चात मानवीय दृष्टि पूर्वक आचरण का स्वीकृति एवं अभ्यास आवश्यक है जिसका स्वरूप आचरण एवं व्यवहार ही है | फलस्वरूप साक्षात्कार अवधारणा पूर्वक विकसित चेतना का ज्ञान, मानवीयतापूर्ण जीवन में वृत्तियों का संयंत होना पाया जाता है | व्यवहार न्याय संगत होने से नियम, न्याय, धर्म के प्रति प्रतिबद्धता आचरण में आता है | इसी क्रम में मानव को सत्य बोध विधि से विचार स्वतंत्रता एवं अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से इच्छा

स्वतंत्रता, पुन: विचारमूलक विधि से व्यवहार स्वतंत्रता, व्यवहार स्वतंत्रता से कार्य स्वतंत्रता, कार्य स्वतंत्रता से उत्पादित वस्तुओं का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील बनाने का स्वतंत्रता देखा गया है | इस ढंग से विकसित चेतना विधि से आशा बंधन, विचार बंधन और इच्छा बंधन से मुक्ति की बात आती है | यही मुख्य बात रहा है | मुख्य राज्य परिवार में जितना क्षेत्र समाया रहता है उस क्षेत्र क सभाओं का परीक्षण करने का अधिकार दसों सदस्यों में समान रहता है | इसी के साथ पाँचों आयामों के कार्यक्रम के सम्बंध में जिसके सामने जो समस्या आता है अथवा व्यवस्था का कड़ी जुड़ता है उसे समाधान करने का अधिकार दसों सदस्यों का समान है | इस प्रकार सभा में भागीदारी करने का अधिकार समान होना स्पष्ट होता है | इस प्रकार हर सदस्य समितियों का, सभाओं का, परीक्षण करने का अधिकार समान रहेगा और यदि अधिकार माना जाय तो हर परिवार में पाँचों आयामों का भागीदारी, ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित कार्याभ्यास, व्यवहाराभ्यास सुलभ हुआ या नहीं हुआ | जैसा शिक्षा-संस्कार सुलभता, न्याय-सुरक्षा सुलभता, उत्पादन-कार्य सुलभता, विनिमय-कोष सुलभता, स्वास्थ्य-संयम सुलभता ये सब के लिये सुलभ हुआ या नहीं हुआ इसका परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण कर सकते हैं | इसमें कहीं कमी अथवा त्रुटि रहने पर उसे सुधारने का अधिकार समान रूप से सदस्यों को रहेगा | यही स्वतंत्रता का मतलब है; जिससे अखण्ड समाज प्रमाणित होने का सूत्र है | सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- **ए. नागराज , प्रणेता मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद , भजनाश्रम, अमरकंटक , जिला-अनूपपुर (म. प्र.) ,**